B.A III Hons Paper VIII

अमेरिका का गृहयुद्ध

अमेरिका के गृहयुद्ध के कारणों का विश्लेषण करने हेतु कई सिद्धान्त प्रस्तुत किये गये हैं। एक सैद्धान्तिक विचारधारा इस गृहयुद्ध को सम्पूर्णतः आर्थिक कारणों से प्रेरित और प्रभावित माना गया है। यह सिद्धान्त मानता है कि अमेरिका के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्रों के पूँजीपति, श्रमिकों एवं स्वतंत्र कृषकों तथा दक्षिणी भाग के अभिजात्य-कृषक-समुदाय के बीच गहन -गम्भीर एवं अदमनीय संघर्ष का यह एक चरण था । इस दृष्टि से, अमेरीकी गृह-युद्ध को, दो भिन्न अर्थव्यवस्थाओं के असंदृश्य स्वार्थों -हितों के संघर्षात्मक - टकराव का परिणाम कहा जा सकता है जो अन्ततः प्रबल राजनैतिक कलह और विवाद बनकर प्रकट हुआ किन्तु इसकी मूल-प्रवृति अनिवार्यतः आर्थिक थी।

इस आर्थिक - नियतिवादी - विचारधारा का एक रूपान्तरित सिद्धान्त, सुस्पष्ट मार्क्सवादी तथ्यों को भी अपने विश्लेषण में शामिल करता है तथा गृहयुद्ध के आदर्शात्मक एवं वैचारिक पक्षों पर जोर देते हुए इसे पूँजीपति एवं सर्वहारा वर्गों के बीच चलनेवाले सुदीर्घ-संघर्ष की एक अवश्यम्भावी अवस्था या चरण मानता है। जिस प्रकार अमरीकी- स्वतंत्रता संग्राम ने ब्रिटिश-साम्राज्यवाद के चंगुल से अमरीकी बुर्जुआ - वर्ग को मुक्ति दिलायी, ठीक उसी तरह, अमरीकी गृहयुद्ध एक बुर्जुआ क्रान्ति थी जिसने दक्षिणी-क्षेत्र के कृषक - समुदाय की "प्रतिक्रान्तिकारी" शक्ति को समाप्त किया । इस प्रकार, अमेरिका के गृह युद्ध ने अनिवार्यतः उसी मार्ग को प्रशस्त किया जो पूँजीपतियों तथा श्रमिक-वर्ग के निर्णायक संघर्ष तक पहुँचाने वाला है।

अनेक इतिहासविदों ने, अमरीकी गृह-युद्ध के लिये यद्यपि आर्थिक - कारणों को स्वीकार किया है किन्तु इस संघर्ष की व्याख्या वे अधिक व्यापक दृष्टि से करते हैं। अमरीकी गृह-युद्ध को ये इतिहासकार वस्तुतः संस्कृति और सभ्यता के बीच का संघर्ष मानते हैं जिसमें दोनों पक्षों के अपने-अपने राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचार, आदर्श एवं प्रथाएँ थी । इन इतिहासविदों में से कुछ यह भी मानते हैं कि इस गृह-युद्ध का मूल-कारण दो अन्तर्विरोधी राष्ट्रीयता की भावना का उदय था उत्तरी एवं दक्षिणी भागों में विकसित हुई राष्ट्रवाद की अवधारणा । अतः ये इतिहासकार अमरीकी गृह-युद्ध को वस्तुतः अमेरिका के दक्षिणी भागों के "स्वतंत्रता संघर्ष" के स्वरूप में देखते और व्याख्यायित करते हैं।

कुछ अन्य इतिहासकार इस गृह-युद्ध को "गलती से उत्पन्न" हुए दृष्टि के अन्तर्गत विश्लेषित करते हैं। उनका कहना है कि युद्ध हर हाल में असामान्य एवं अविवेकपूर्ण कृत्य है तथा अमेरिका के इस अनावश्यक गृह-युद्ध को भी कृत्रिम-कारकों ने जन्म दिया न कि किसी अन्तर्निहित मूल प्रेरणा ने। इस दृष्टि कोण की यह मान्यता है कि उत्तरी एवं दक्षिणी भाग की सभ्यताओं के आर्थिक एवं अन्य दूसरे पक्षों में कोई इतना बड़ा अन्तर या कोई ऐसी विसंगति न थी जिसके कारण गृह-युद्ध अनिवार्य हो जाय । ये इतिहासविद तर्क देते हैं कि दास प्रथा स्वतः एक मृत प्राय संस्था ही चली थी अतः ये केवल राजनीतिज्ञ और कटटरपंथी अतिवादी नेता ही थे जिन्होंने सामान्य साधारण लोगों के बीच मौजूद असमानता एवं अन्तर्विरोधों को बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत किया तथा इन्हें इतना भड़काया कि इनकी पारस्परिक शत्रुता और घृणा बेहद बढ़ गयी तथा एक सम्पूर्ण पीढ़ी की भाईचारे की भावना नष्ट हो गयी एवं गृह - युद्ध अनिवार्य हो चला।

"भ्रमित पीढ़ी की सैद्धान्तिक विचारधारा से मिलती जुलती एक अन्य विचार धारा तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों पर अपना ध्यान केन्द्रित कर इस घटना की व्याख्या करती है। इस विचारधारा की यह मान्यता है कि 1850 से 1860 के बीच अमेरिका के दो मुख्य राजनीतिक दल डेमोक्रेट तथा

रिपब्लिकन्स, कमोबेस स्थानीय एवं राज्य स्तरीय विचारों आदर्शों एवं हितों के अपरिपक्व प्रतिफलन थे। प्रत्येक दल का अपना राज्य स्तरीय संगठन था तथा अपने-अपने राजनीतिक-शक्ति परीक्षणों में वे अपने विभिन्न स्तर के राजनीतिक संगठनों का प्रयोग करते थे तथा विभिन्न अवसरों पर दल की राष्ट्रीय नीति का निर्धारण भी इसी आधार पर किया करते थे लेकिन दोनों में से किसी भी दल के पास कोई राष्ट्रीय स्तर का दूरदर्शी नेता न था। इस परिस्थितियों के अन्तर्गत राजनीतिक दलों के एकीकृत एवं सुसंगठित राष्ट्रीय नीतियों का विकास हो ही नहीं सकता फलतः राजनीतिक पतवार विहिन राष्ट्र असहाय परिस्थितियों में बहता भटकता अन्ततः गृह-युद्ध के कगार तक जा पहुँचा।

एक अन्य सैद्धान्तिक दृष्टिकोण नैतिक पक्षों को आधार बनाकर अपनी व्याख्या प्रस्तुत करता है। यह दृष्टिकोण यद्यपि विभिन्न श्रेणियों के लोगों के बीच मौजूद मूलभूत फर्कों को स्वीकार करता है तथापि इसकी मान्यता है कि नैतिक एवं आदर्शात्मक पक्षों ने इस युद्ध में सर्वोपरि भूमिका निभायी । इस मत के समर्थक विद्वान यह स्वीकार नहीं करते कि दास प्रथा एक मृतप्राय संस्था हो चली थी उल्टा, उनका कहना है कि दक्षिण द्वारा दास प्रथा को बनाए रखना उत्तरी भागों के लिए एक नैतिक संकट का कारण बन गया था और अन्ततः उन्हें दक्षिणी भाग के खिलाफ युद्ध में उतरना पड़ा।

विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रेरित इन विचारों सिद्धान्तों में यद्यपि पारस्परिक मतभेद है किन्तु कई सामान्य बिन्दुओं को भी ये उजागर करते हैं। प्रथमतः अमरीकी गृहयुद्ध के अनेक कारण थे, आर्थिक द्वेष एवं संघर्ष, दास प्रथा के प्रति विरोध का रवैया राजनीतिक नेतृत्व की असक्षमता, घृणा और जुगुप्सा से उत्पन्न नेत्रहीन अलगावाद की भावना, एक तरफ बहकाये हुये लोगों की महत्वाकांक्षी योजनाएँ तो दूसरी तरफ साधारण जन समुदाय की अज्ञानता और ना समझी । इन सभी कारकों ने उत्तरी और दक्षिणी भाग के लोगो को अलग करने और संघर्ष की आग में घी डालने का काम किया।

गृह--युद्ध का तात्कालिक कारण तो फिर भी, दास प्रथा को बनाये रखने की प्रवृत्ति से उत्पन्न संघर्ष ही था जिसे अपने अन्तिम स्वरूप तक पहुँचने में विलमॉट प्रोविजिओ तथा कैनसास -नेब्रास्का बिल से उत्पन्न विवादों ने भरपूर योगदान दिया। ये कानूनी प्रावधान दास प्रथा को संयुक्त राज्य अमेरिका के किसी भी क्षेत्र में फैलने या बने रहने से सम्बन्धित थे । राष्ट्रपति पद के लिए लिंकन का यही चुनावी मुद्दा था तथा अपने राष्ट्रपतित्वकाल में जब लिंकन की सरकार ने मिसौरी समझौता सीमा के दक्षिण किसी नये क्षेत्र में दास प्रथा के फैलने के प्रश्न पर स्पष्ट असहमति जाहिर की तो 1860-61 की शीतकालीन समझौता वार्ता पूरी तरह निष्फल हो गयी। दास प्रथा को बनाये रखने या खत्म करने के प्रश्न पर लोग आपस में क्यों लड़ पड़े इसकी अनेक व्याख्याएँ हो सकती हैं किन्तु तथ्य यही था कि किसी न किसी रूप में दास प्रथा के स्वरूप से जुड़े मुद्दों को लेकर ही अमेरिका के उत्तरी और दक्षिण क्षेत्र संघर्ष में उतर पड़े।

इस पृष्ठभूमि में, इन परिस्थितियों एवं घटनाओं का संक्षिप्त सर्वेक्षण आवश्यक है, जिन्होंने इस विवाद को गृहयुद्ध में बदल डाला। 1789 में लागू हुए संविधान ने, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को तेरह स्वतंत्र उपनिवेशों का संघ बना दिया। लोगों को दो नागरिकता प्राप्त हुई-संघ की नागरिकता एवं प्रान्त की नागरिकता । तकनीकी शब्दानुसार कोई भी अमेरिकी प्रान्त संघ से अलग होने के अधिकार का दावा कर सकता था किन्तु 1861 ई. तक किसी प्रान्त ने ऐसा किया नहीं।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में हुई आर्थिक प्रगति, विभिन्न क्षेत्रों में एक जैसी

नहीं हुई । उत्तरी प्रान्तो ने आधुनिक उद्योग विकसित कर लिये जबकि दक्षिण क्षेत्र के प्रान्तों ने कपास- की खेती का अपना पारम्परिक कार्य जारी रखा। इसलिए दक्षिणी प्रान्त के भूस्वामियों का निहित स्वार्थ दास-प्रथा की संस्था बना रहा और वे इस संस्था को कायम रखना चाहते थे। दक्षिणी क्षेत्रों में दास प्रथा को कायम रखने की भावना में आर्थिक कारणों से अधिक उन सामाजिक समस्याओ का योगदान था जो उस क्षेत्र में व्याप्त थे। दक्षिण के श्वेत लोगों की मनः स्थिति अभी ऐसी बन नहीं पायी थी कि वे अपनी सामाजिक व्यवस्था में काले लोगों (हब्शी) को आत्मसात कर ले या स्वतंत्र हब्शियों के साथ मिलकर रहें।

उद्योग सम्पन्न उत्तरी प्रान्तों ने, अपने औद्योगिक हितो के रक्षार्थ, मुक्त व्यापार नीति का विरोध करना शुरु किया तथा ब्रिटिश उद्योगों से उत्पादित वस्तुओ के आयात पर ऊंची सीमा-शुल्क एवं कर लगाए जाने की मांग की । जबकि दक्षिणी प्रान्त, मुक्त व्यापार नीति के समर्थक थे क्योंकि उन्हे सस्ते ब्रिटिश वस्तुओ की जरूरत थी और ब्रिटेन उनके द्वारा कपास उत्पादित का प्रमुख खरीदार था।

दास प्रथा के मुददे पर उत्तर और दक्षिण के प्रान्तों के बीच अत्यन्त गंभीर दरार तो पहले से मौजूद ही था, अब उत्तर के प्रान्तो में भी दास प्रथा के प्रसार के प्रश्न पर यह दरार और भी अधिक खतरनाक ढंग से बढ़ने लगा। उत्तरी क्षेत्र, अपने तीव्र गति से विकसित हो रहे उद्योगो के बूते दक्षिणी प्रान्तों को काफी पीछे छोड़, आगे निकल रहे थे। योरोप से आकर बसने वाले लोग भी दास प्रथा प्रचलित दक्षिणी प्रान्त में बसने से बचना चाह रहे थे। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का विस्तृत उपजाऊ पश्चिमी क्षेत्र तेजी से आबाद हो रहा था जबकि दक्षिण-पश्चिम का सीमित क्षेत्र भी खाली पड़ा था। उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में बसने वाले लोग चाहे यूरोप से आये हो या उत्तरी प्रान्तों से एक बात पर वे दृढ़ निश्चय थे कि उस क्षेत्र में वे दास प्रथा का प्रचलन नही होने देंगे। जब उत्तर पश्चिमी क्षेत्र अपने लिए प्रान्तीय दर्जा की मांग करने लगे तो दक्षिणी प्रान्तों के निवासी चौकन्ना हो गये। संसद में या प्रतिनिधि सभामें पहले से ही उनकी स्थिति बहुत कमजोर थी क्योंकि संसद के लिए प्रतिनिधि जनसंख्या के आधार पर चुने जाते थे । राष्ट्रीय सरकार की व्यवस्था में उन्हें एक मात्र सुरक्षा केवल "सीनेट" में प्राप्त थी जहाँ प्रत्येक प्रान्त के दो प्रतिनिधि होते थे । उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र को प्रान्तीय दर्जा प्राप्त होने मे विलम्ब हो -इसके लिए दक्षिण क्षेत्र के निवासियों ने वह सब कुछ किया जो वे कर सकते थे और अन्ततः यह मांग की "सीनेट" की गुणात्मकता को बनाये रखने के लिए किसी दास प्रथा विहने प्रान्त को तभी सीनेट में प्रवेश दिया जाय जबकि उसके साथ-साथ किसी दास प्रथा युक्त प्रान्त का प्रवेश भी हो । हेनरी क्ले अपने मिसौरी समझौता (1820) ई. एवं (1850 ई.) के द्वारा कुछ समय तक उसे टालने में सफल तो हो गया लेकिन समय और प्रारब्ध उत्तरी क्षेत्र के अनुकूल था । भौगोलिक स्थिति, जनसंख्या उद्योगो की स्थापना और विकास तथा पश्चिमी विश्व की उदारवादी मानसिकता यह सभी कुछ उत्तरी प्रान्तों को स्वतः उपलब्ध था । 1852 ई . तक मध्यममार्गी राजनेता जैसे, क्ले, कैलचर तथा वेबस्टर आदि मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे तथा अब दोनों खेमों के नवउदित नौजवान राजनेता अपने-अपने विचारो पर दृढ़ थे और समझौता करना नहीं चाहते थे। 1854 ई . में रिपब्लिकन दल की स्थापना हुई जो सम्पूर्ण उत्तरी क्षेत्र की पार्टी मानी जाती थी तथा दास प्रथा को सीमित करते जाने और अन्ततः उसके उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध थी।

Scanned by TapScanner

1860 ई. में अब्राहम लिंकन को अपना उम्मीदवार बनाकर रिपब्लिकन दल ने डेमोक्रेट दल पर प्रबल बहुमत के साथ विजय पायी । इस चुनाव का एक मात्र प्रमुख मुद्दा दास प्रथा था जिस पर उत्तर और दक्षिण के प्रांत एक दूसरे के विपरीत थे। लिंकन का यह आश्वासन कि वे दास प्रथा की यथार्थ स्थिति में छेड़छाड़ नहीं करेंगे किन्तु दास-प्रथा को मौजूदा सीमा से आगे फैलाने का विरोध करेंगे दक्षिणी प्रान्त के निवासियों की बेचैनी कम न कर सका । दास प्रथा के उन्मूलन के समर्थकों की संख्या नित्य प्रति बढ़ रही थी और वे अब हिंसात्मक उपायों पर उतारू हो रहे थे। उत्तरी क्षेत्र समर्थित रिपब्लिकन दल सत्ता में थी।

दक्षिणी प्रान्तों ने संघ से अलग होकर स्वतंत्र सरकार बनाने का निश्चय किया क्योंकि वे राष्ट्रीय व्यवस्था में अपने लिए न तो किसी हीन एवं निकृष्ट दर्जा पर सहमत थे और न ही जबरदस्ती स्वतंत्र कर दिये गये लगभग **40** लाख हब्शियों के साथ बराबरी के स्तर पर सामाजिक जीवन बिताने की कल्पना कर सकते थे। संयुक्त राज्य अमेरिका के सात प्रान्तों ने दक्षिणी कैरोलिया, अलाबामा, फलोरिडा, टेक्सास, जौर्जिया, मिसिसीपी तथा लुसियाना- राष्ट्रीय संयुक्त संघ से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया तथा "कनफेडेरेट स्टेटस आफ अमेरिका" (अमेरिका के सन्धिबद्ध प्रान्त) के नाम से एक नया राष्ट्र बनाया और जैफरसन डेविस को अपना राष्ट्राध्यक्ष चुना।

जब यह स्पष्ट हो चला कि दक्षिण के सातों प्रान्त संयुक्त राज्य से अपने अलगाव को स्थायी बनाने पर कटिबद्ध हैं तो राष्ट्रपति लिंकन ने संघीय अस्तित्व को बनाये रखने के लिए सैनिक शक्ति के उपयोग का निर्णय लिया। जनसंख्या, धन, उद्योग, परिवहन तथा नौसेना आदि में उत्तरी प्रान्तों को जबरदस्त आधिक्य हासिल था किन्तु दक्षिणी राज्यों को विलक्षण सैन्य नेतृत्व उपलब्ध था साथ ही उन्हें अपनी ही जमीन पर एक ऐसा युद्ध लड़ने का सुअवसर मिला जिसमें श्वेतों की सभ्यता को उस जमीन पर सुरक्षित रखने की जिम्मेवारी उनको युद्धोन्माद बना था ।

फरवरी **1861** ई. में गृहयुद्ध फूट पड़ा जो चार रक्त रंजित वर्षों तक चलता रहा। तीन वर्षों तक ऐसा लगता था कि संघ (संयुक्त राज्य) को बचाये नहीं रखा जा सकता है। वस्तुतः अब्राहम लिंकन के चरित्र सूझ-बूझ और व्यक्तित्व के बिना, संयुक्त राज्य अमेरिका को बनाये रखना सम्भव न हो पाता।

परिणाम :- दास प्रथा का उन्मूलन हुआ और संयुक्त राज्य की व्यवस्था अमेरिका में अक्षुण्ण रही तथा उस पर फिर कभी ऐसा खतरा पैदा न हुआ। यद्यपि, गृहयुद्ध ने दोनों प्रान्त के निवासियों की चेतना में प्रान्तीय वैमनस्य की कटुता उत्पन्न कर दी थी जो विजयी उत्तरी क्षेत्र के द्वारा निर्मम पुनर्निर्माण की कठोर नीतियों के कारण और भी गहरी होती गयी । गृह-युद्ध की समाप्ति के ठीक पाँच दिन बाद, सुलह/समझौते में व्यस्त लिंकन की हत्या हो गयी। रिपब्लिकन कांग्रेस के अतिवादी नेताओं के हाथों में शासन प्रशासन की बागडोर आ गयी और उन्होंने पराजित पीड़ित उत्तरी प्रान्तों के साथ वैसा सलूक किया जैसे विजित क्षेत्र पर कोई विजेता करता है। उत्तर प्रान्तों को बारह वर्षों तक सैन्य आधिपत्य में रहने को विवश किया आर्थिक और राजनीतिक शोषण के साथ साथ हब्शियों को प्रभुत्व सम्पन्न स्थिति रहने को। विवश किया । कालप्रवाह में ये जख्म काफी भर गये लेकिन पूरी तरह नहीं ।

अमेरिकी गृह युद्ध में उत्तरी प्रान्तों की विजय को राष्ट्रीयता की विजय का एक अन्य उदाहरण माना जा सकता है । इसके फलस्वरूप उत्तरी प्रान्तों के औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग के हाथ शासन की सत्ता आ गयी और लिंकन की मृत्यु के पश्चात उत्तरी क्षेत्र ने प्रभावशाली रिपब्लिकन दल की बागडोर संभल ली

Scanned by TapScanner